A + B

उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद् रामनगर (नैनीताल)

हाईस्कूल परीक्षा (उत्तराखण्ड) 'ब' 10 पन्ने

नोट—

परीक्षार्थी द्वारा भरा ..

हिन्दी

201(HUA)

शनिवार

02 मार्च 2019

... द्वारा भरा जाय

खण्ड - अ

प्रश्न सं. 1

आत्मा अजर — — — — — — — — — — — किया जाय।

उत्तर (क) आत्मा अजर और अमर होती है, इसमें अनन्त ज्ञान, शक्ति और आनन्द का भण्डार होता है। परन्तु अविद्यावशात् वह अपने स्वरूप को भूला हुआ है जिसकारण वह अल्पज्ञता पाता है। इसी अल्पज्ञता के कारण अल्पशक्तिमत्ता आती है जिसके कारण दुःख मिलता है।

उत्तर (ख) जब तक आत्मा का आत्मसाक्षात्कार नहीं होता, तब तक अपूर्णता की अनुभूति बनी रहती है और आनन्द की खोज जारी रहती है।

उत्तर (ग) आनन्द की खोज में सफलता, आनन्द की प्राप्ति, अपने ~~परमब्रह्म~~ ज्ञानमय स्वरूप में स्थिति यही मनुष्य का पुरुषार्थ, उसके जीवन का चरम लक्ष्य है। मनुष्य को इस पुरुषार्थ-साधना के योग्य बनाना ही शिक्षा का उद्देश्य है।

उत्तर(घ) समाज और अध्यापक का मूल कर्तव्य यह है कि - व्यक्ति के अधिकारी बनने में सहायता दी जाय, अनुकूल वातावरण उत्पन्न किया जाय।

उत्तर (ङ) उपर्युक्त गद्यांश के लिये उचित शीर्षक -
'ज्ञान और आत्मसाक्षात्कार'

प्रश्न सं. 3

पत्र - लेखन

सेवा में,
प्रधानाचार्य जी
स० वि० म० इंटर कॉलेज
नथुवावाला, देहरादून

विषय :- (एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण हेतु)
2 मार्च 2019
महोदय,

सविनय निवेदन इस प्रकार से है कि आगामी अप्रैल माह में वार्षिक विज्ञान प्रदर्शनी - 2019-20 का आयोजन किया जा रहा है।
पिछले वर्ष इस प्रदर्शनी में हमारे सभी मॉडल नई सोच के साथ बनाये गये थे, परन्तु

इस वर्ष यह असंभव लग रहा है। हमारी कक्षा के सभी विद्यार्थियों को विज्ञान मॉडल तैयार करने हेतु प्रेरणा की आवश्यकता है। अतः मैं अपनी संपूर्ण कक्षा की ओर से हमें एक शैक्षिक भ्रमण हेतु ले जाने का निवेदन करती हूँ।

हम शैक्षिक भ्रमण के लिये विज्ञान-धाम जाने की इच्छा रखते हैं। विज्ञान धाम में विज्ञान से संबंधित कई प्रयोग तथा कई घटनायें बड़े ही रचनात्मक ढंग से समझाई गई हैं। यदि आप हमें भ्रमण के लिये विज्ञान-धाम ले जाते हैं तो हम पूरी तत्परता के साथ अच्छे विज्ञान मॉडल बना विज्ञान प्रदर्शनी में प्रस्तुत कर पायेंगे।

आशा करती हूँ कि आप हमारी कक्षा के इस निवेदन पर विचार करेंगे तथा हमें जल्द ही एक शैक्षिक भ्रमण के लिये ले जायेंगे।

धन्यवाद।

आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या
क० ख० ग०
कक्षा - दशम

प्रश्न सं. 4

र्शिनी- उत्तर (क) क्रियापद - नाचता है। भेद - सकर्मक, संयुक्त तथा असमापिका।

मी

रन्तु

(ख) क्रियापद - ~~[illegible]~~ गाती है। भेद- अकर्मक, संयुक्त तथा असमापिका।

प्रश्न सं. 04

(ग) किन्तु।

(घ) ही।

प्रश्न सं. 5

उत्तर (क) (iii) मिश्रवाक्य।

(ख) (iii) मोहन को बुलाओ।

उत्तर (ग) राधा के द्वारा रामायण पढ़ी गई।

उत्तर (घ) मुझसे चला नहीं जाता।

प्रश्न सं. 6

उत्तर (क) (iii) अर्क

(ख). (iii) उर्वी यामिनी।

प्रश्न सं.7

(ii) तुम्हारी यह - - - - - - कठिन पाषाण।

उत्तर(क) बच्चे की दंतुरित मुस्कान कवि को बड़ी ही मनमोहक तथा आकर्षक प्रतीत होती है। कवि कहते हैं कि बच्चे की वह दंतुरित मुस्कान किसी मृतक को भी जीवित कर देगी क्योंकि यह मुस्कान बहुत ही आकर्षक, निश्छल तथा इस संसार की तमाम व्याधियों से कोसों दूर है। कवि को प्रतीत होता है कि मानो जैसे उसकी दंतुरित मुस्कान रूपी कमल तालाब छोड़ कवि की झोंपड़ी में खिल रहे हों तथा आस-पास के संपूर्ण वातावरण को मनमोहक बना रहे हों।

उत्तर (ग) उत्तर (ग) → बच्चे के स्पर्श से कवि नागार्जुन जी को अत्यंत सुखद अनुभूति होती है। बच्चे के स्पर्श के कारण कवि का पाषाण जैसा कठोर हृदय पिघलकर कोमल बन जाता है। कवि आगे कहते हैं कि- "मेरा जीवन बाँस तथा बबूल के वृक्षों की तरह बेहद नीरस चल रहा था परंतु बच्चे के स्पर्श से मानो मेरा जीवन शेफालिका के फूलों की भाँति सुगंधित हो गया हो।" उस नन्हे बच्चे के स्पर्श-मात्र से कवि अपनी तमाम तामसिकताओं को भूलकर अच्छा महसूस करने लगता है।

प्रश्न सं० 8

उत्तर (क) फागुन पूरे वर्ष की सबसे विचित्र ऋतु होती है। इसमें मौसम में कई ऐसे बदलाव आते हैं जो अन्य मौसमों में देखने को नहीं मिलते जैसे –

[1] फागुन में न तो अधिक गर्मी होती है न तो अधिक सर्दी क्योंकि यह माह सर्दियों का अंत तथा गर्मियों का आरंभ होता है।

[2] ऋतुराज बसंत का आगमन भी फागुन में ही होता है।

[3] सर्वाधिक लोकप्रिय त्योहार होली भी फागुन में ही मनाई जाती है।

[4] इस माह में फसलें पककर तैयार हो जाती हैं।

उत्तर (ग) 'लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' पंक्ति का भाव यह है कि - निश्छलता, भोलापन तथा सरलता स्त्रियों (लड़कियों) के चरित्र के गुण होते हैं। परंतु बड़े शोक की बात है कि आज का समाज उनके इन गुणों का सम्मान करने के स्थान पर इन विशेषताओं का फ़ायदा उठाते हैं। समाज लड़कियों के भोलेपन का फ़ायदा उठाकर उन्हें दहेज के लिये प्रताड़ित करते हैं तथा

दहेज जैसी कुप्रथाओं को प्रोत्साहित करते हैं। ऐसी स्थिति में या तो लड़कियाँ वह प्रताड़ना चुपचाप सहन करती हैं या आत्महत्या कर लेती हैं जो कि सही नहीं है। अतः 'कन्यादान' कविता में अपनी बेटी को विदा करते समय यह सीख देती है कि अंदर तो तुम सरलता, भोलेपन को धारण करना परंतु बाहर इसकी झलक मत दिखने देना।

प्रश्न सं. 9

उत्तर(क) 'छाया मत छूना' कविता के माध्यम से कवि गिरिजाकुमार माथुर जी यह संदेश देना चाहते हैं कि हम सभी को यथार्थ को स्वीकार करना चाहिये। हमें अतीत की बातों को याद न कर वर्तमान समय में जीना चाहिये क्योंकि अतीत की बातों को याद करने पर केवल आपका दुःख बढ़ता है और कुछ नहीं। अतः हमें अपनी अतीत की सभी दुःखदायी बातों को छोड़ वर्तमान में परिश्रम करना चाहिये जिससे हमारा भविष्य सुखमयी हो सके।

उत्तर(ख) 'संगतकार' जैसे व्यक्ति जो स्वयं को पीछे रख औरों को आगे बढ़ने का अवसर देते हैं व उनकी पूर्ण सहायता करते हैं, लगभग हर क्षेत्र में विद्यमान हैं। ऐसे व्यक्ति हमें

अक्सर चिकित्सा, फिल्म उद्योग, सूचना एवं प्रसारण, पत्रकारिता आदि में देखने को मिलते हैं।

प्रश्न सं. 10

(ङ) बालगोबिन भगत - - - - - - जवानी वाली।

उत्तर (क) बालगोबिन भगत प्रतिवर्ष मीलों पैदल चलकर गंगा-स्नान पर जाते थे। उनकी गंगा-स्नान में इतनी आस्था नहीं थी। उनकी आस्था केवल संत समागम तथा लोक-दर्शन में थी। अतः गंगा-स्नान पर जाने का बालगोबिन भगत जी का मुख्य अभिप्राय वहाँ जाकर संतसमागम तथा लोकदर्शन देखने जाना होता था।

उत्तर (ख) बालगोबिन भगत गृहस्थ तथा संन्यासी दोनों ही थे। वे गंगा-स्नान पर जब भी जाते तो चार-पाँच दिन में लौटकर ही खाते क्योंकि वे एक गृहस्थ व्यक्ति थे तो किसी से भिक्षा कैसे माँगते तथा वे एक संन्यासी पुरुष भी थे तो किसी से संबल कैसे लेते। एक साधु को किसी से संबल लेने का क्या हक? इसीलिये बालगोबिन भगत अपनी यात्रा में न तो किसी से भिक्षा लेते थे और न ही संबल रखते थे।

प्रश्न सं. 11

उत्तर(ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के स्त्री-शिक्षा के संबंध मे विचार निम्नवत् है:-

[1] द्विवेदी जी के अनुसार, समाज में स्त्री शिक्षा को अनर्थकारी माना जाता है परंतु यह सही नही है। स्त्रियो के लिये शिक्षा प्राप्त करना बहुत अनिवार्य है।

[2] द्विवेदी जी के अनुसार, प्राचीनकाल में मंडन मिश्र की सहधर्मचारिणी का शंकराचार्य जी के छक्के छुड़ा देना तथा गार्गी का बड़े-बड़े शास्त्रो का ज्ञाता होना प्राचीनकाल मे स्त्री-शिक्षा के प्रचलन की ओर संकेत देता है। जब हम प्राचीनकाल की कई प्रथाओ को आज भी मानते है तो स्त्री शिक्षा को क्यो नही।

उत्तर (ग) 'संस्कृति' पाठ के अनुसार संस्कृत व्यक्ति वह कहलाया जा सकता है जिसने अपनी बुद्धि, विवेक तथा क्षमता का उपयोग कर किसी नई चीज अथवा किसी नये तथ्य का आविष्कार किया हो, संस्कृत व्यक्ति वही कहलाता है जो अपने अंतर्मन के विचारो का वह परिष्कृत रूप सबके सम्मुख रखे जिसका उपयोग मानव-कल्याण के लिये किया जा सके। अतः संस्कृत व्यक्ति वह व्यक्ति होगा जो अपनी बुद्धि तथा चेतना का उपयोग मानव-कल्याण हेतु नये तथ्य के आविष्कार में करे।

प्रश्न सं. 12

उत्तर(क) सेनानी न होते हुये भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन इसीलिए कहते थे क्योंकि उसके अंदर देशप्रेम की भावना कूट-कूटकर भरी थी, जब चौक पर नेताजी की बिना चश्मेवाली प्रतिमा लगाई गई तो कैप्टन को बुरा लगा। उसने असली चश्मे का एक फ्रेम उस प्रतिमा पर लगा दिया। जब भी किसी ग्राहक को वही फ्रेम पसंद आता था जो प्रतिमा पर था तो चश्मेवाला उसे उतारकर ग्राहक को दे देता था। बाद में वह नेताजी से माफ़ी माँगते हुये उनकी प्रतिमा पर एक नया फ्रेम लगा देता था। नेताजी की बिना चश्मे की मूर्ति देख आहत होना तथा उस मूर्ति पर असली चश्मा लगाना चश्मेवाले अंदर भरी देशभक्ति की भावना के बारे में बताता है। अतः उसकी देशभक्ति के कारण लोग उसे कैप्टन कहकर पुकारा करते थे।

उत्तर(ख) फादर कामिल बुल्के अत्यंत मधुर एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। वे सालों बाद भी यदि किसी से मिलते तो उसी उमंग के साथ बात करते थे। विपदा के समय उनके सांत्वना भरे दो शब्द जादू कर देते थे। उनका आलिंगन देवदार के वृक्ष की तरह था। वे मानवता की जीवन्त मूर्ति थे। अतः इन्हीं कारणों

से लेखक ने फ़ादर कामिल बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' कहा है।

प्रश्न 13 का उत्तर

उत्तर(क) 'माता का आँचल' पाठ में लेखक ने बहुत ही प्राचीन, सुंदर ग्राम्य संस्कृति का वर्णन किया है। प्राचीन ग्राम्य संस्कृति में आज के समय जितनी सुविधायें नहीं थीं परंतु लोगों का आपस में प्रेम बहुत था। बच्चों के पास आज के समान मोबाइल फ़ोन, वीडियो गेम्स नहीं होते थे, वे गली में घरौंदे बनाते थे, मिट्टी के खिलौनों से खेला करते थे तथा कवितायें गाया करते थे। प्राचीन ग्राम्य संस्कृति में सुंदर-सुंदर खेत-खलिहान देखने को मिलते थे जिसका वर्णन इस पाठ में बखूबी किया गया है।

उत्तर(ख) 'जॉर्ज पंचम की नाक' कहानी हमारे वर्तमान सरकारी तंत्र पर एक व्यंग्य है। मूर्ति पर नाक लगाने के पीछे सरकारी तंत्र में जो बदहवासी दिखाई देती है, वह हमारी स्वाभिमान रहित गुलामी मानसिकता की ओर इंगित करती है। इस कहानी के माध्यम से हमारे सरकारी तंत्र के काम टालने की आदत तथा सम्मान रहित चरित्र का बोध होता है। स्वतंत्रता के कई वर्षों पश्चात भी हमारे सरकारी तंत्र एक अंग्रेजी शासक की लाट पर नाक लगाने के लिये राष्ट्रीय स्वाभिमान की बलि चढ़ा देता है जो तंत्र के मानसिक रूप से गुलाम

रहीं

ही रहने की ओर इंगित करता है।

उत्तर(ग) गंतोक एक ऐसा शहर है जिसे इसके कठोर परिश्रमी लोगो ने सुरम्य बना दिया है। पर्वतीय शहर होने के कारण यहाँ के लोगो को अपनी दैनिक आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिये भी मीलो दूर पैदल चल कर आना होता है। इसके अतिरिक्त गंतोक का इतिहास तथा वहाँ की एक-एक वस्तु गंतोक के मेहनतकश लोगो के परिश्रम का प्रमाण देती है। इसीलिये गंतोक शहर को 'मेहनतकश बादशाहो का शहर' कहा गया है।

खण्ड-ब

प्रश्न सं. 14

(अ) हरिद्वारम् उत्तराखंडस्य - - - - - - सान्ति।

उत्तर(क) हरिद्वारम् उत्तराखंडस्य ऐतिहासिकं, सांस्कृतिकं पौराणिकं, विश्वविख्यातं नगरम् अस्ति।

उत्तर(ख) भारतीया: संस्कृति:, राष्ट्रियैक्यभाव:, देशस्य गरिमाबोध: च हरिद्वारस्य कणे-कणे व्याप्ता: सान्ति।

उत्तर(घ) : हरिद्वारम्, हरद्वारम्, स्वर्गद्वारम्, तपोवनम्, मायाक्षेत्रम्, मायापुरी, कपिलाश्रमः, कपिला च अस्यैव पुण्यक्षेत्रस्य हरिद्वारस्य अपराणि नामानि पुराणेषु वर्णितानि सन्ति।

प्रश्न 15 का उत्तर

उत्तर(ङ) तापनघ्, ताडनात् वा सुवर्णः क्लिश्यमानः नास्ति।

उत्तर(ग) जनाः सुवर्णं गुञ्जयाः तोलयन्ति।

प्रश्न सं. 16

उत्तर(क) सज्जनानां संगतिः सत्सङ्गतिः कथ्यते।

उत्तर(ख) वने विवेकानन्दं केचन वानराः अनुगताः।

उत्तर(घ) रघुः राजा दिलीपस्य पुत्रः आसीत्।

प्रश्न सं. 17

(क) श्रेष्ठ।
(ख) मगधदेशस्य।
(ङ) सत्ये।
(च) कुलव्रत।

प्रश्न सं. 18

उत्तर(क) (i) मद्वारि:

(ii) पवित्र:

(ख) (i) ~~पित्र~~ पितृ + आज्ञा

(ii) हरे + अव

(घ)(i) प्र ~~प्र~~ (उपसर्ग)

(ii) दु: (उपसर्ग)

प्रश्न सं. 19

उत्तर :

(क) आकाशे :- आकाशे मेघ: सान्ति।

~~(ख)~~ (घ) पतान्ति :- वृक्षात् पत्राणि पतान्ति।

(ङ) हिमालयात् :- गंगा हिमालयात् प्रवहाति।

(च) पत्रम् :- ~~अहं~~ अहम् पत्रम् लिखामि।

खण्ड 'अ'
प्रश्न सं. 2

निबंध लेखन - भारतीय संस्कृति

(i) प्राचीनतम संस्कृति :- "रत्नाकरा धौतपदां
हिमालय किरीटिनीम,
ब्रह्म राजर्षि रत्नाढ्या
वंदे भारत मातरम् ॥"

समुद्र सदैव इसके चरणकमलों को धोता है, हिमालय इसके सिर पर विराजमान है, ऐसा अद्भुत देश है भारत। भारत की संस्कृति भी उतनी ही प्राचीन तथा अद्भुत है। कहा जाता है कि भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है। यह संस्कृति संपूर्ण विश्व को स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व का नारा देती है। भारतीय संस्कृति हमें सभ्यता तथा संस्कार भी प्रदान करती है। हमारे आदर-सत्कार का तरीका, रहन-सहन का ढंग, दूसरे देशों के प्रति अपनत्व सभी हमारी स्वर्णिम संस्कृति की देन है। ऐसी संस्कृति को संपूर्ण विश्व नमन करता है।

(ii) अनेकता में एकता :- "हिंद देश के निवासी,
सभी जन एक हैं।
रंग-रूप-देश-भाषा
चाहे अनेक हैं।"

प्रस्तुत पंक्तियों से भारत की अनेकता में एकता प्रदान करने वाली संस्कृति का बोध

होता है। हमारे देश के सभी राज्य सभ्यता के मामले में भिन्न - भिन्न हैं। यहाँ की भाषा, भोजन, वस्त्र इत्यादि सब भिन्न - भिन्न हैं लेकिन गौरव तब महसूस होता है जब प्रत्येक राज्य का नागरिक नागरिकता पूछे जाने पर अपने गाँव, कस्बे, शहर या प्रांत का नहीं बल्कि भारत का नाम लेता है। लोखिका मधु कांकरिया ने अपने यात्रा वृतांत में बताया है कि जब वे एक सिक्केमी महिला से पूछती हैं कि क्या आप सिक्केमी हैं तो महिला का जवाब था - "नहीं मैं इण्डियन हूँ।" हमारे इतिहास में भी ऐसी कई घटनाओं का उल्लेख है जिसमें हमारी एकता ने ही दुश्मनों को देश से बाहर खदेड़ा हो। अतः हमारी सांस्कृतिक एकता ही सबसे बड़ी शक्ति है।

(iii) विश्वबंधुत्व का नारा:- भारत की संस्कृति में सबसे मैत्रीपूर्ण भाव ही रखा जाता है। भारत विश्व में बंधुत्वता का संचार करने वाला एकमात्र देश है। सही मायनों में भारत अपनी बंधुत्वता एवं मित्रता का संचार कर संपूर्ण विश्व की बागडोर सँभाले रहता है। जब 18वीं सदी में अंग्रेजों ने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी स्थापित की तो भारतीय संस्कृति ने उन्हें स्वीकारा तथा अपने देश में स्थान दिया परंतु उनके राज करने पर तत्कालीन राजाओं ने उन्हें बंधुत्व का नारा दिया व मैत्री से राज करने का प्रस्ताव दिया। हमारी संस्कृति में अतिथि को देवो भवः माना जाता है। इसीलिये हमने उनका सम्मान किया। इसी तरह भारत स्वतंत्रता के पश्चात भी UN की गोष्ठियों में विश्व स्तर पर

बंधुत्वता का प्रसार किया है। भारतीय संस्कृति को विश्व गुरू इसीलिए कहा जाता है क्योंकि यह विश्व को स्वतंत्रता, बंधुत्व तथा भाईचारे का सही अर्थ बता रही है।

(iv) शाँति का संदेश : भारतीय संस्कृति सर्वत्र शाँति बनाये रखने का संपूर्ण प्रयास करती है। आज के समय मे विश्व के अनेक देश धन तथा शक्ति प्रदर्शन की चाह में खुद से कमजोर देशों पर हमला बोल देते है। हाल ही में पाकिस्तान ने 14 फरवरी 2019 को पुलवामा (जम्मू कश्मीर) मे 40 सैन्य अफसरों मार डाले। पाकिस्तान मे पल रहे आतंकियों ने इस कार्य को अंजाम दिया। भारत सदैव ही पाकिस्तान और चीन जैसे राष्ट्रो के साथ शाँति स्थापित करने की पूर्ण कोशिश करता है। कई सारी आतंकवादी घटनाओं के बावजूद भारत ने शाँति स्थापित करने के लिये प्रतिक्रिया नही दी परंतु 26 फरवरी की रात 3:00 बजे भारत ने आतंकियो के अड्डो पर बम गिराकर उन्हे नष्ट कर दिया। इस मिशन मे इस बात का खास ध्यान रखा गया कि किसी भी पाकिस्तानी नागरिक की जान को खतरा न हो। इस प्रकार भारतीय संस्कृति वैश्विक स्तर पर शाँति का संचार करने के लिये जानी जाती है। मुझे एकता, बंधुत्व तथा शाँति को अपनी प्राथमिकता मानने वाली तथा विश्व में भारत के नाम

को गौरान्वित करने वाली इस भारतीय संस्कृति
पर गर्व है।